॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

द्वादश (12वाँ) अध्याय

भक्तियोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : reg.learngeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं(म्) सततयुक्ता ये, भक्तास्त्वां(म्) पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं(न्), तेषां(ङ्) के योगवित्तमाः॥1॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां(न्), नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेताः(स्), ते मे युक्ततमा मताः॥2॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यम्, अव्यक्तं(म्) पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं(ञ्) च, कूटस्थमचलं(न्) ध्रुवम्॥3॥

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं(म्), सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव, सर्वभूतहिते रताः॥4॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम्, अव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं(न्), देहवद्भिरवाप्यते॥5॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि, मयि सन्न्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन, मां(न्) ध्यायन्त उपासते॥6॥

तेषामहं(म्) समुद्धर्ता, मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ, मय्यावेशितचेतसाम्॥7॥

मय्येव मन आधत्स्व, मयि बुद्धिं(न्) निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव, अत ऊर्ध्वं(न्) न संशयः॥8॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

अथ चित्तं(म्) समाधातुं(न्), न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो, मामिच्छाप्तुं(न्) धनञ्जय ॥9॥

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि, मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि, कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥10॥

अथैतदप्यशक्तोऽसि, कर्तुं(म्) मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं(न्), ततः(ख्) कुरु यतात्मवान्॥11॥

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्, ज्ञानाद्ध्यानं(व्ँ) विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागः(स्), त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥12॥

अद्वेष्टा सर्वभूतानां(म्), मैत्रः(ख्) करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः(स्), समदुःखसुखः क्षमी॥13॥

सन्तुष्टः(स्) सततं(यँ) योगी, यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिः(र्), यो मद्भक्तः(स्) स मे प्रियः॥14॥

यस्मान्नोद्विजते लोको, लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः(र्), मुक्तो यः(स्) स च मे प्रियः॥15॥

अनपेक्षः(श्) शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्तः(स्) स मे प्रियः॥16॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान्यः(स्) स मे प्रियः॥17॥

समः(श्) शत्रौ च मित्रे च, तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः(स्) सङ्गविवर्जितः॥18॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः(स्) स्थिरमतिः(र्), भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥19॥

ये तु धर्म्यामृतमिदं(यँ), यथोक्तं(म्) पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा, भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥20॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

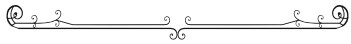

Learngeeta.com

LEARN GEETA

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

स्तर 1 उच्चारण नियमावली

- **ह्रस्व स्वर** (उच्चारण समय एक काल) अ इ उ ऋ
- **दीर्घ स्वर** (उच्चारण समय दो काल) आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ
- **वर्गीय व्यञ्जन**

(क वर्ग) कण्ठ से उच्चारित	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	अनुनासिक व्यञ्जन
(च वर्ग) तालू से उच्चारित	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
(ट वर्ग) मूर्धा से उच्चारित	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	
(त वर्ग) दाँतों से उच्चारित	त्	थ्	द्	ध्	न्	
(प वर्ग) ओंठों से उच्चारित	प्	फ्	ब्	भ्	म्	

- **अवर्गीय व्यञ्जन**

अन्तस्थ	य्	र्	ल्	व्	
ऊष्म	श्	ष्	स्	ह्	

- **अनुस्वार** (वर्ण के ऊपर आने वाला बिन्दु) ं (जैसे संशय, अहिंसा, एवं आदि)
- **विसर्ग** (वर्ण के बाद दो बिन्दु) ः (पुरुषः, दुःख, मैत्रः आदि)
- **संयुक्त वर्ण** (एक से अधिक व्यञ्जनों से बना वर्ण)
  जैसे **द्ध**=द्+ध, **प्र**=प्+र, **न्न**=न्+न, **र्य**=र्+य, **क्ष**=क्+ष, **ज्ञ**=ज्+ञ, **त्र**=त्+र, **क्त्या**= क्+त्+या
- **अनुस्वार(ं) उच्चारण नियम**
  - अनुस्वार के पश्चात् वर्गीय व्यञ्जन आने पर उसी वर्ग के अनुनासिक का उच्चारण होगा।
  - अवर्गीय व्यञ्जन य, व, ल् आने पर क्रमशः अनुनासिक यँ, वँ, लँ का उच्चारण होगा।
  - शेष अन्य किसी भी वर्ण के आने पर पद के बीच में वँ जैसा, पद के अंत में म् का उच्चारण होगा।
- **विसर्ग(ः) उच्चारण नियम** विसर्ग(ः) का उच्चारण पूर्व/पर वर्ण सन्दर्भानुसार ह, ख, फ, श, ष, स, र जैसा होगा।
- **आघात(॥) उच्चारण नियम** संयुक्त वर्ण से पूर्व वर्ण पर आघात (बल) देना चाहिये। '॥' का चिह्न प्रत्येक आवश्यक वर्ण के ऊपर दिया गया है।

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।